International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत साहित्य में मानवीय गुणों की अवधारणा

प्रो0 रश्मि कुमार

हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सारः
गोस्वामी तुलसीदास जी मात्रा एक भक्त कवि ही नहीं थे वरन एक महान द्रष्टा, मानवतावादी चिन्तक और मनीषी भी थे। तत्कालीन समाज की स्थिति और अन्य चुनौतियों को देखते हुए गोस्वामी जी की दूरदर्शिता ने उन्हें ऐसे ग्रन्थ के निर्माण की प्रेरणा दी जिसकी भाषा सामान्य जनता के पहुँच में हो। तुलसीदास का आविर्भाव जिस युग में हुआ और जो चुनौतियाँ उनके सामने थीं उस अन्ध युग को ऐसे आदर्श की आवश्यकता थी जो जन मन को छूकर अनुकरण करने के लिए प्रेरित करे, आवश्यकता थी ऐसे नायक की जो शाब्दिक उच्चारण के स्थान पर आचरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत कर सके। उच्चतर मानव गुणों से जुड़ा एक चरित्रा जो फतवे नहीं देता बल्कि अपने आचरण से उन्हें प्रामाणिक करता है। व्यापक एवं सर्वग्राही दृष्टि से सम्पन्न तुलसीदास ने समाज के कल्याण एवं उद्धार के लिए उच्चतर मूल्यों, शील, मर्यादा, करूणा, आदि से युक्त राम का आदर्श चरित्रा जनता के समक्ष रखा। राम एक व्यक्ति चरित्रा न होकर समाज नायक, लोक नायक हैं जिनके माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास जी मानवीय गुणों का प्रक्षेपण किये हैं। मानस के राम उदार चेता महापुरुष हैं। उनके यहाँ विस्तार है, व्यापकता है, औदार्य है, प्रेम है, करूण, दया है, परोपकार है। मानवीय गुणों में कभी संकीर्णता नहीं होती वे व्यापक और शाश्वत होते हैं, उनका स्वरूप सार्वभौमिक होता है। गोस्वामी तुलसीदासजी राम के माध्यम से शौर्य, धैर्य, बल, विवेक, परोपकार, क्षमा, दया, समता, दान, संतोष, अहिंसा आदि सार्वभौम मानवीय गुणों का गुणगान किये हैं।

शब्द संकेत : गोस्वामी तुलसीदास, शील, मर्यादा, करूणा, मानवीय गुणों और सार्वभौमिक ।

विषय प्रवेशः

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी क्षेत्र के अत्यन्त लोकप्रिय कवि हैं। उन्हें हिन्दी का जातीय कवि कहा जाता है। तुलसीदास का शील–निरूपण जीवन के विविध स्वरूपों और मनोदशाओं को प्रकट करता है। विद्वानों द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित अनेक ग्रंथों की खोज की गई है, उसमें कितने ग्रन्थ प्रामाणिक हैं और कितने अप्रमाणिक, इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। तुलसीदास जी ने स्वयं अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण कहीं नहीं दिया है। ''तुलसी ग्रन्थावली'' में तुलसीदासजी के 12 ग्रन्थों को ही विद्वानों के अनुसार प्रमाणिक स्वीकार किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी मात्रा एक भक्त कवि ही नहीं थे वरन एक महान द्रष्टा, मानवतावादी चिन्तक और मनीषी भी थे। तत्कालीन समाज की स्थिति और अन्य चुनौतियों को देखते हुए गोस्वामी जी की दूरदर्शिता ने उन्हें ऐसे ग्रन्थ के निर्माण की प्रेरणा दी जिसकी भाषा सामान्य जनता के पहुँच में हो। तुलसीदास का आविर्भाव जिस युग में हुआ और जो चुनौतियाँ उनके सामने थीं उस अन्ध युग को ऐसे आदर्श की आवश्यकता थी जो जन मन को छूकर अनुकरण करने के लिए प्रेरित करे, आवश्यकता थी ऐसे नायक की जो शाब्दिक उच्चारण के स्थान पर आचरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत कर सके। उच्चतर मानव गुणों से जुड़ा एक चरित्रा जो फतवे नहीं देता बल्कि अपने आचरण से उन्हें प्रामाणिक करता है। व्यापक एवं सर्वग्राही दृष्टि से सम्पन्न तुलसीदास ने समाज के कल्याण एवं उद्धार के लिए उच्चतर मूल्यों, शील, मर्यादा, करूणा, आदि से युक्त राम का आदर्श चरित्रा जनता के समक्ष रखा। राम एक व्यक्ति चरित्रा न होकर समाज नायक, लोक नायक हैं जिनके माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास जी मानवीय गुणों का प्रक्षेपण किये हैं। मानस के राम उदार चेता महापुरुष हैं। उनके यहाँ विस्तार है, व्यापकता है, औदार्य है, प्रेम है, करूण, दया है, परोपकार है। मानवीय गुणों में कभी संकीर्णता नहीं होती वे व्यापक और शाश्वत होते हैं, उनका स्वरूप सार्वभौमिक होता है।

गोस्वामी तुलसीदासजी राम के माध्यम से शौर्य, धैर्य, बल, विवेक, परोपकार, क्षमा, दया, समता, दान, संतोष, अहिंसा आदि सार्वभौम मानवीय गुणों का गुणगान करते हैं। तुलसी की सामाजिक चेतना अपने नायक एवं अन्य पात्राों के माध्यम से मानवीय गुणों की स्थापना में सदैव सजग एवं सावधान रही है। राम तो मानवीय गुणों की स्थापना में सदैव सजग एवं सावधान रही है। राम तो मानवीय गुणों के पुंज हैं पर अन्य पात्रा भी अपने को मानवीय गुणें के अनुरूप जीते हैं। राम को केन्द्र बिन्दु मानकर अन्य पात्राों को साथ लेते हुए तुलसी ने मानवीय गुणों का प्रतिपादन किया तथा उन्हें परिभाषित किया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा मानवीय गुणों के सन्दर्भ में कही बातें निरंतर प्रासंगिक कही जा सकती हैं। यदि उस युग में तुलसी साहित्य की उपयोगिता और प्रासंगिकता थी तो आज उससे कहीं अधिक है। गोस्वामी तुलसीदास जी को सोलहवीं सदी और आज की बौद्धिकता, आधुनिकता तथा प्रगति का दावा करनेवाली सदी में कोई अन्तर नहीं पड़ा है यदि अन्तर पड़ा है तो मानवीय गुणों की गिरावट की ओर। आज समाज को तुलसी साहित्य के चरित्राों की विशिष्टताओं, पिता की आज्ञा का सत्यता से पालन करना,

भाई–भाई के प्रति प्रेम, सेवा, त्याग, सत्ता के प्रति त्याग एवं वैराग्य, निम्न वर्ग के प्रति स्नेह, दया, शरणागत के प्रति दया, मैत्री एवं क्षमा, निर्बलों के प्रति परोपकार, सत्य, अहिंसा, दान, शील, धैर्य आदि को हृदय से अपनाने की आवश्यकता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के चरित्रा का निर्माण करके अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा दी। उन्होंने मानवीय गुणों एवं मर्यादा पालन पर बल दिया तथा प्रत्येक अमानवीय कृत्य व विचारधारा के विरूद्ध आवाज उठाने का आह्वान किया। आज समाज को पशुता के धरातल से ऊपर उठाने के लिए गोस्वामी तुलसीदास को उजागर एवं जाग्रत करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार देखते हैं कि तुलसी–साहित्य में सार्वभौम मानवीय गुणों की सम्यक प्रतिष्ठा की गयी है। उनके प्रतिनिधि पात्रा सत्य, करूणा, प्रेम, मैत्री, परोपकार, क्षमा, दया एवं न्याय से साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। तुलसी साहित्य के प्रमुख पात्रा मनसा, वाचा एवं कर्मणा सार्वभौम मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में संलग्न है। श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, जटायु, निषादराज, शबरी, केवट एवं अंगद आदि अनेक ऐसे महान पात्रा हैं, जिनके कृत्य सार्वभौम मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा की दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके द्वारा स्थापित मानवीय गुणों द्वारा न केवल भारत देश के नागरिकों को अपितु सम्पूर्ण विश्व का कल्याण निहित है।

तुलसीदास रचित काव्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है। श्रीरामचरित मानस भारतीय धर्म एवं संस्कृति की पावन गंगा है। यह एक ऐसी महान रचना है जिसमें कदम–कदम पर मानवीय गुणों को चित्रित किया गया है। 'श्रीरामचरित मानस' मानवतावाद, साम्प्रदायिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश देने वाला महान ग्रंथ है। तुलसीदास मानवतावादी कवि थे इसलिए उनकी दृष्टि एकात्म दर्शन समन्वित है। संत स्वभाव के तुलसी को किसी से घृणा नहीं, किसी के प्रति उपेक्षा का भाव नहीं है।

श्रीरामचरित मानस के पात्रा मानवीय गुणों के प्रतीक हैं। अपने पात्रों के माध्यम से तुलसीदास सत्य, अहिंसा, धैर्य, प्रेम, मैत्री, दया, दान, परोपकार, क्षमा समता आदि मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करते हैं। तुलसीदास जिन गुणों पर बल देते हैं, उन्हें वे अपने पात्रों द्वारा पालन करवाते हैं। तुलसीदास यह बराबर ध्यान देते हैं कि जिन गुणों के आचरण का आग्रह वे कर रहे हैं कहीं ऐसा न हो कि वे केवल सैद्धान्तिक ही न रह जाएँ, इसलिए वे उन गुणों को कोरे वक्तव्यों के अतिरिक्त चरित्रों द्वारा भी प्रमाणित करते हैं।

श्री रामचरित मानस में तुलसीदास ने प्रमुख सार्वभौम मानवीय गुणों के महत्त्व को सशक्त ढ़ंग से चित्रित किया है। सामाजिक व्यवस्था को व्यवस्थित एवं सुचारु ढ़ंग से चलाने के लिए जिस प्रकार के आचरण की आवश्यकता है उन सभी को इन सार्वभौम मानवीय गुणों से जोड़कर तुलसीदास ने सामान्य जनता के समक्ष आदर्श के रूप में उपस्थित किया है। उनके द्वारा स्थापित ये मानवीय गुण मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक परिवेश में सुख–शांति की स्थापना करते हैं।

सत्य :

श्री रामचरित मानस सत्य का महत्त्व दर्शाने वाला एवं उसे जीव में उतारने की शिक्षा देने वाला महान ग्रन्थ है। सत्य के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाले अनेक पात्रा मानस में दिखाई देते हैं। तुलसीदास सत्य को कल्पना मात्रा बन कर नहीं रह जाते अपितु, उसे चरित्रों के माध्यम से भी प्रतिपादित करते हैं। श्रीरामचरित मानस में उन्होंने स्पष्ट घोषणा की है कि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। इसको प्रमाणित करने के लिए वे वेद तथा पुराण आदि के अनेक उदाहरण देते हैं। राम सत्य की व्याख्या करते हुए सुंमंत्रा से कहते हैं कि शिबि, दधीचि, हरिश्चन्द्र आदि ने अनेक राजाओं ने अपार कष्ट सहे, राजा रन्तिदेव और बलि ने बहुत संकट सहकर भी धर्म का परित्याग नहीं किया। यथा –

धरमु न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना।
मैं सोइ धरम सुलभ करि पावा, तजें तिहूँ पुर अजजसु पावा।
किया सिबि, धीच हरिचंद नरेसा, सहे धूरम हित कोटि कलेसा।
रतिदेव बलि भूप सुजाना, धरमु धरेउ सहि संकट नाना।।

दोहावली में गोस्वामी जी ने सत्य को एक महान धर्म के रूप में प्रतिस्थापित किया है तथा महाराज दशरथ के उदाहरण के द्वारा सत्य के महत्व को दर्शाया है। राजा दशरथ को सत्य का ज्ञान था, उन्होंने यह भली–भाँति समझा था कि सत्य के समान कोई धर्म नहीं है। इसलिए सत्य की रक्षा के लिए उन्होंने अपने सर्वगुण सम्पन्न पुत्रा राम का त्याग किया और श्रीराम के विरह में अपने प्राणों का त्याग किया। महारानी कैकेयी को दिये गये वचनों का निर्वाह करने के लिए महाराज दशरथ अपने प्राणप्रिय पुत्रा श्रीराम को वनवास देकर अपने जीवन का उत्सर्ग कर देते हैं।

तुलसी जान्यो दसरथहिं धरमु न सत्य समान।
रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान।

श्रीजानकी–मंगल में गोस्वामी तुलसीदास जी ने महाराज दशरथ के सत्यचरित्रा को परिलक्षित किया है। मुनि विश्वामित्रा जब अयोध्या जाकर महाराज को अपने आने का प्रयोजन सुनाते हैं तो सत्य के बन्धन में बंधे होने के कारण महाराज दशरथ उन्हें कोई उत्तर नहीं दे पाते।

जबहि मुनीस मही सहि काजु सुनायउ।
भयउ सनेह सतय बस उतरु न आयउ।।

तुलसीदास ने विनय पत्रिका में श्रीराम को सत्य की सृष्टि करनेवाला, सत्य का पालन, सत्य आचरण करने वाला, सत्य का निर्वाह करनेवाला, सत्य के माध्यम से शक्तिमान, सन्तुष्ट एवं दुःख हरण करनेवाला बताया है–

धर्मवर्मनि ब्रह्माकर्मबौद्यैक, विप्रपूज्य, ब्रह्माण्यजनाप्रिय मुरारी।
सत्यकृत, सत्यरत, सत्यव्रत, सर्वदा पुष्ट संतुष्ट, संकष्ट हारी।।

कवितावली में गोस्वामीजी ने कहा है कि प्रभु अपने वचनों की सत्यता को जगजाहिर करने के उद्देश्य से अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिए नृसिंह रूप में प्रगट होना, ग्राह से गज की रक्षा करना, द्रौपदी की लाज बचाना आदि प्रभु के इसी आचरण को सिद्ध करता है –

"प्रभु सत्य करी प्रहलादगिरा, प्रगटे नरकेहरि खंभ महाँ।
झषराज ग्रस्यो गजराजु, कृपा तत्काल विलंबु कियो न तहाँ।।
सुर साखि दै राखी है पाण्डु बधू पट लूटत, कोटिक भूप जहाँ।
तुलसी! भजु सोच विमोचन को, जनको पनु राम न राख्यो कहाँ।।

प्रेम :

प्रेम मानव हृदय की एक उच्च एवं रागात्मक भावना है। इसके द्वारा शत्रु का हृदय भी परिवर्तित किया जा सकता है, प्रेम के आगे महान् शक्तिशाली शत्रु भी परास्त हो जाता है। प्रेम अपने विविधात्मक रूप में मानव जीवन को सदैव प्रभावित करता है। प्रेम मनुष्य के सामाजिक जीवन एवं वैयक्तिक जीवन का मूल आधार है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि प्रभु को केवल प्रेम प्यारा है, यह बात जो जानना चाहते है जान ले। प्रेम के समान प्रभु राम के लिए कोई भी वस्तु प्रिय नहीं है–

"रामहिं केवल प्रेमु पिआरा, जानि लेउ जो जाननिहारा।"

दोहावली में गोस्वामीजी तुलसीदास ने चातक के एकांगी प्रेम के द्वारा सत्य के महत्व को प्रदर्शित किया है। ऐसी मान्यता है कि चातक पक्षी स्वाति नक्षत्रा में मेघ द्वारा बरसे जल को ही ग्रहण करता है। संसार के सभी चर–अचर जीवों के लिए मेघ हितकारी होता है, परन्तु चातक का मेघ के प्रति जो सत्य प्रेम है वह अद्वितीय है। तुलसीदासजी का मानना है कि मेघ कठोर ओले बरसा कर चातक के पंखों को भले ही क्षति पहुँचाये पर चातक अपने प्रेम की सत्यता का निर्वाह करने में कभी भूल नहीं करता –

"बरषि परुष पाहन पयद पंख करौ टुक टूक।
तुलसी परी न चाहिये चतुर चातकहि चूक।

मैत्री :

समस्त प्राणियों के प्रति आत्मीयता के भाव को मैत्री कहा जाता है। मैत्री सदैव परहित के भाव से प्रेरित होकर की जाती है। तुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस में मित्राता को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। गोस्वामी जी की मान्यता है कि समस्त भेद–भाव और छल–कपट त्याग कर मैत्री की स्थापना होनी चाहिए। तुलसी दास के अनुसार मित्राता में जाँति–पाँति का भेद नहीं होना चाहिए। उनकी इस मान्यता का उदाहरण मानस में स्पष्ट देखने को मिलता है। अयोध्या से लंका तक प्रभु राम तीन मित्रा बनाते हैं। प्रथम निषाद राज, दूसरे सुग्रीव, और तीसरे विभीषण। एक छोटी जाति का था, दूसरा वानर जाति का और तीसरा ब्राह्मण जाति का। प्रभु श्रीराम की मित्राता के लिए ऊँची जाति की नहीं, मनुष्य की भी नहीं केवल प्राणी होने की आवश्यकता है।

निषाद राज से प्रभु श्रीराम की भेंट वन जाते समय होती है। प्रभु राम का साक्षात दर्शन करके गुह के हृदय में हर्ष का पार नहीं था। प्रभु राम भी अत्यन्त प्रेम से उसे समीप बैठाकर कुशल पूछते हैं। श्रीराम निषाद को सखा का सम्बोधन करते हैं और स्वाभाविक स्नेह के साथ उससे बात करते हैं। निषाद स्वंय इस बात को स्वीकार करते हैं कि मैं कुबुद्धि और कुजात हूँ पर श्रीराम द्वारा अपनाये जाने के कारण मैं विश्व का भूषण हो गया। जाँति–पाँति के भेद भाव का यह उचित समाधान है। आज के परिवेश में यह उदाहरण अनुकरणीय है।

कपटी कायर कुमति कुजाति, लोक वेद बाहेर सब भाँति।
राम कीन्ह आपन जबही ते, भयउँ भुवन भूषन तबही ते।"
निषादराज राम के प्रति अपनी मित्राता को निष्ठापूर्वक निभाते हैं।

दया :

दया मानव हृदय का वह स्वाभाविक गुण है जिसके माध्यम से वह दूसरे के कष्ट को दूर करने की प्रेरणा प्राप्त करता है। अपना पराया, भाई बन्धु, मित्रा या शत्रु जो भी विपत्ति में हो उसे दुःख में जानकर उसकी सहायता करके उसके कष्टों को दूर करने का भाव ही दया है। दया करने वाला सज्जन या सन्त कहा जाता है। तुलसी दास ने रामचरित मानस में कहा है कि सन्तों का हृदय कोमल होता है इसलिए उनसे दूसरे का कष्ट देखा नहीं जाता और उन्हें शीघ्र ही दया आ जाती है।

जिनका हृदय कोमल होता है, जो दीन जनों पर दया करते हैं दूसरों को दुःख से दूर कर सुख देने वाले होते हैं वे प्रभु श्रीराम को भी प्रिय हैं। तुलसी दास ने दया को धर्म माना है, उनका कहना है, कि दया के समान कोई धर्म नहीं है। दया सबसे बड़ा धर्म है।

"कोमल चित्त दीनन्ह परदाया, मन बच क्रम मम भगति अमाया'।
'अद्य कि पिसुनता सम कहु आना, धर्म कि दया सरिस हरजाना"।

परोपकार :

परोपकार एक सद्वृति है। सात्विक वृत्ति के परिणामस्वरूप परोपकार की भावना जागृत होती है। यह भावना भेद भाव को नष्ट करती है और मनुष्य दूसरे की विपत्ति को दूर करने के लिए प्रयासरत हो उठता है। परोपकार मनुष्य को 'स्व' की सीमा से निकालकर सामाजिक बनाता है। प्राणियों का हित करने वाला समाज में संत कहलाता है। संतों के हृदय में सत्वृत्तियों निवास करती है। इसलिए वे परहित के लिए स्वंय कष्ट सहने के लिए तैयार हो जाते हैं।

गोस्वामीजी ने माना है कि परहित के लिए भगवान का अवतार होता है –

"जब–जब होइ धरम की हानी, बाढ़हि अधम असुर अभिमानी।
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।"

कवितावली में गोस्वामीजी ने व्यापक रूप में परोपकार का वर्णन किया है। प्रभु श्रीराम दीन दुखियों के रक्षक हैं, उनका जहाँ स्मरण किया जाता है वे वहाँ अविलम्ब पहुँच जाते हैं। श्रीरामने जटायु एवं शबरी का उद्धार किया। बल सम्पन्न बालि का नाश करके सुग्रीव को राज्य प्रदान किया। रावण से भयभीत विभीषण को अभय प्रदान किया।

"जय मायामृगमथन, गीध–सबरी, उद्धारन।
जय कबंधसूदन बिसाल तरू ताल बिदारन।।
दवन बालि बालसालि, थपन सुग्रीव, संतहित।
कपि कराल भट भालु कटक पालन, कृपाल चित।
जय सिय–वियोग–दुख हेत कृत–सेतुबंध बारिधिदमन।
दससीस विभीषन अभयप्रद, जय जय जय जानकि रमन।।

श्रीकृष्ण गीतावली में गोस्वामीजी ने परोपकार का वर्णन करते हुए माना है। ब्रजवासियों का हित करने के लिए प्रभु ने मनुष्य रूप धारण किया है।

तुलसी प्रभु प्रेम बिबस मनुज रूपधारी।
बालकेलि लीला रस ब्रज जन हितकारी।।

अहिंसाः

अहिंसा सबसे उत्तम धर्म है इसलिए मनुष्य को कभी भी, कहीं भी किसी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सभी प्राणियों के प्रति मन, कर्म, वचन से मैत्री का भाव रखना चाहिए तथा मनुष्य जैसे अपने प्राण से प्रेम करता है उसी प्रकार दूसरे के प्राणों से प्रेम करना चाहिए। निरपराधों को मारनेवाला जगत् में सदैव निन्दा का पात्रा बनता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में अहिंसा को बहुत महत्त्व दिया है। वेद को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा है कि वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना गया है –

परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा।

क्षमा :

दण्ड देने की शक्ति रहते हुए भी अपराधी को दण्डित न करना क्षमा का गुण है। जिसकी हृदयगत भावनाएँ अत्यन्त उदार हैं, वे ही दूसरों के अपराधों को क्षमा कर अपनी महानता का परिचय देते हैं। गोस्वामी तुलसीदास शांति के उपासक हैं उनको व्यर्थ का संघर्ष, तनाव रक्तपात अभीष्ट न था, इसलिए उनके राम सर्व शक्तिमान होते हुए भी नम्रता की मूर्ति है। उन्होंने अपनी चण्ड बाहु शक्ति से रूद्र का कठिन दण्ड तोड़कर वैदेही को प्राप्त किया। किन्तु दूसरे ही क्षण परशुराम से वार्ता करते समय यह सोचना कठिन हो जाता है कि विनय की मूर्ति यह श्रीराम है। एक ओर परशुराम फरसा उठाये मारने की धमकी दे रहे हैं और दूसरी ओर हाथ जोड़ मस्तक नवाये श्रीराम बड़े ही नम्र शब्दों में उनकी स्तुति कर रहे हैं। वे परशुराम से क्षमा मांगते हुए कहते हैं –

जो तुम्ह औतेहु मुनि की नाई पद रज सिसु धरत गोसाईं।
धमहु चूक अनजानत केरी, चाहिअ विप्र उर कृपा धनेरी।
देव एक गुनु धनुष हमारे, नव गुन परम पुनीत तुम्हारे।
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे, धमहु विप्र अपराध हमारे।

त्याग :

प्रेम और विश्वास के पौधे को त्याग का जल सींचता है। त्याग न हो तो कभी प्रेम व विश्वास पनप नहीं सकते। रामचरित में हर श्रेष्ठ पात्रा त्याग के लिए तत्पर है। हर युग में भाई–भाई के बीच बैर और द्वेष तथा सत्ता और पद के लिए निन्दनीय हथकंडे अपनाये जाते हैं। स्वार्थ के अश्लील, बीभत्स नृत्य तुलसी की दया–दृष्टि परिधि से बाहर कैसे जा सकते थे ? सामाजिक महामारी से मर्माहत होकर उन्होंने राम, भरत तथा लक्ष्मण के चरित्रा के माध्यम से सत्ता त्याग का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है।

भरत के इस त्याग भाग को देखकर त्यागी वशिष्ठ भी हतप्रभ हो जाते हैं–

भरत वचन सुनि देखि सनेहू, सभा सहित मुनि भए बिदेहू।

भरत महा महिमा जलरासी, मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी।

संयम :

मन, कर्म एवं वाणी पर नियंत्राण को संयम कहते हैं। संयमित जीवन सुख एवं शांति प्रदान करता है। वाणी और व्यवहार का संयम मन को नियंत्रित करता है और मन का संयम आत्मबोध प्रदान करता है। संयम को परिभाषित करते हुए तुलसीदास ने मानस में कहा है कि विषयों के प्रति आशा न रखना ही संयम है –

सदगुरू बैद वचन बिस्वासा, संयम यह न विषय कैआसा।

धैर्य :

विषम् परिस्थितियों में आत्मसंतुलन बनाये रखना ही धैर्य है। धैर्य मनुष्य को विपत्ति के समय उद्विग्न होने से बचाता है और प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है। श्रीरामचरित मानस में तुलसीदास ने धीर पुरुषों के गुण का उल्लेख सुमन्त्रा के द्वारा बहुत ही सहज ढंग से किया है। श्रीराम वनगमन से व्याकुल राजा दशरथ के मंत्राी सुमन्त धैर्य धारण करने की प्रार्थना करते हैं। सुमन्त्रा राजा दशरथ को धैर्यवान पुरुष मानते हुए कहते हैं कि मूर्ख लोग सुख में हर्षित और दुःख में रोते हैं पर धीर पुरुष अपने ह्रदय को दोनों ही स्थिति में समान रखते हैं, अतः आप शोक का परित्याग कर धीरज को धारण कीजिए –

सुख हरषहिं जड़ दुःख बिलखाहीं, दोउ सम धीर धरहि मन माहीं।

धीरज धरहु विवेकु विचारी, छाड़िउ सोच सकल हितकारी।

सेवा एवं समर्पण :

रामचरित मानस में सेवा और समर्पण जैसे जीवन मूल्य की बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। सच्ची सेवा तभी हो सकती है जब जीवन में पूर्ण समर्पण की भावना हो। मानस में समर्पण पूर्ण सेवा की भावना भरत, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, निषाद, केवट आदि में अदभुत रूप से देखने को मिलती है। सेवक का भाव किस प्रकार का होना चाहिए, इसे श्रीराम हनुमान को समझाते हुए कहते हैं कि सेवा वही कर सकता है जो यह मानकर चले कि मैं सेवक हूँ और यह चराचर जगत् मेरे स्वामी भगवान का रूप है। संसार को प्रभु का रूप माने बिना अथक और आनन्दमयी सेवा नहीं हो सकती –

सो अनन्य जाके असि मति न हरइ हनुमंत।

मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत।

उपरोक्त विषय–वस्तु शोध के लिये नवीन ही नहीं अपितु समाजोपयोगी भी है। उपर्युक्त शोध–शीर्षक पर शोध–कार्य सम्पादित होने से समाज को एक नई दिशा मिलने की प्रबल संभावना बनती है।

साहित्यिक सर्वेक्षण :

गोस्वामी तुलसीदास रचित साहित्य पर 19वीं एवं 20वीं सदी में कई बहुमूल्य कार्य हुए हैं, जिसमें सामाजिक गतिविधियों एवं राष्ट्रीयता की समस्याओं के विभिन्न तथ्यों को रेखांकित किया गया है। पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के तहत विभिन्न आचार्यों द्वारा संपादित कार्यों का अवलोकन किया गया है। जिसमें सद्गुरूशरण, अवस्थी रचित पुस्तक – तुलसी : व्यक्तित्व और विचार, विद्यामन्दिर, लखनऊ, 1952 ई0, कुमार राजकुमार कृत पुस्तक – तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन, : सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा 2012 वि0, गणेश लाला रचित पुस्तक – श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन–चरित : गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण, मुरादाबाद 1969 ई0, आचार्य प्रभाकर मिश्र द्वारा रचित पुस्तक – वर्तमान समय में तुलसी की प्रासंगिकता, भारतीय तुलसी शोध संस्थान , महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी रचित पुस्तक – गोस्वामी के दार्शनिक विचार : तुलसी ग्रन्थावली, डॉ0 विमलकुमार जैन रचित पुस्तक – तुलसीदास और उनका साहित्य : साहित्य सदन, देहरादून, 1957 ई0 (2014ई0) में गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य रचना शैली एवं परम्पराओं पर व्यापक चर्चा है। उपर्युक्त पुस्तकों में गोस्वामी तुलसीदास–साहित्य से संबन्धित विभिन्न तथ्यों का अवलोकन प्रस्तुत किया गया है ।

उद्देश्य :

वर्तमान परिवेश में प्रायः लोगों की प्रवृत्ति जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा आदि के प्रति संकीर्ण होती जा रही है, परिणामतः समाज में संकीर्णता, कट्टरता, आतंक व हिंसा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इस सन्दर्भ में यदि विश्व के प्रमुख धर्मों के मूल तत्वों का अनुशीलन किया जाय तो ज्ञात होगा कि उन सबमें उच्च मानवीय गुणों तथा नैतिक कर्त्तव्यों की ही स्थापना की गयी है। उन सभी धर्मों के ग्रन्थों में ऐसे अनेक नैतिक मानवीय गुण मिलते हैं, जो सभी देशों में मान्य है उन्हें हम सार्वभौम मानवीय गुण कहते हैं। सार्वभौम मानवीय गुणों की दृष्टि से तुलसी साहित्य का अत्यन्त महत्व है और उनके द्वारा स्थापित यह मूल्य अत्यन्त प्रासंगिक भी है। प्रस्तुत आलेख में तुलसी साहित्य में निहित सार्वभौम मानवीय गुणों के अनुसंधान का प्रयास किया गया है।

अध्ययन पद्धति :

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

निष्कर्षः

गोस्वामी तुलसीदास ने समाज का हर दृष्टि से अध्ययन मनन किया है और सभी क्षेत्रों मे समन्वय स्थापित करते हुए तत्कालीन जन जीवन में व्याप्त घोर धर्मिक विषमता विद्वेष, वैमनस्य, कटुता को दूर करके पारस्परिक, स्नेह, सौहार्द व सहानुभूति का प्रचार व प्रसार किया। इस दृष्टि से तुलसी का व्यक्तित्व व कृतित्व पूर्णरूपेण फलप्रद है। इन्होने गृहस्थ और वैराग्य में, लोक और शास्त्र में, ज्ञान और भक्ति में, निगुर्ण और सगुण समन्वयवादी नीति को अपनाया। इनकी समष्टि, व्यष्टि हेतु समन्वयात्मक दृष्टि ने तदयुगीन विषमताओं विकराल स्थितियों तथा विघटनकारी परिस्थितियों में समता, समरसता व समानता, स्नेह, सौहार्द, सौन्दर्य लाने में विशेष योगदान दिया है। गोस्वमी तुलसीदास लोकनाय थे। लोकनायक वही होता है जो लोक व लोग की विशिष्टता, निकृष्टता, स्तरीय व तलीय चिन्ता, उन्नति व अवनति, सामाजिक व मानवीय मूल्यों की जीवन्तता, मूर्तता तथा भौतिक स्वरों की उच्चता पराकाष्ठा सम्पन्नता हीनता का समग्रता व विशालता से ज्ञान रखता हों। तुलसी इस अर्थ में सच्चे लोकनायक थे। तुलसी की चिंता व उसके साहित्य का तमाम विमर्श समाजोपयोगी होकर सामाजिक प्रोन्नति, प्रगति, प्रतिष्ठा का पर्याय है। लोकनायक तुलसी का यही आदर्शवादी दृष्टिकोण मानव की जीवन्तता को सार्थकता व मूल्यवता प्रदान करता हुआ स्वार्थ परमार्थ, प्रवृति–निवृत्ति व्यष्टिसमष्टि के आन्तरिक व्यवधनों व अवरोधें को दूर कर हमारे सम्मुख समरसता, समानता का सुसंस्कृत व सुव्यवस्थित रूप सहजता व सरलता से प्रस्तुत करता है।

संदर्भ :

1. सद्गुरूशरण, अवस्थी 1952तुलसी : व्यक्तित्व और विचार, विद्यामन्दिर, लखनऊ ।
2. कुमार राजकुमार2012तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन, : सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा।
3. गणेश लाला1969श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन–चरित : गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण, मुरादाबाद ।
4. डॉ0 विमलकुमार जैन 1957तुलसीदास और उनका साहित्य : साहित्य सदन, देहरादून ।